दिनांक 15 मार्च, 1985

सं स्रो.वि./एफ.डी.[गुड़गावां/10-85/10565.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. स्रानन्द मैटल वर्कस, गुड़गावां, के श्रमिक श्री कैसर दत्त तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई स्रौद्योगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भन, भौद्योगिक विवाद भिष्टिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415—3—अम/68/15254, दिनांक 20 बून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495—जी—अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की बारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त अबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्याश्री केसर दत्त की सेवाझों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो. वि./एफ. डी./10572.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राध है कि मै. मेनेजिंग डायरैक्टर, महेन्द्रगढ़ सैन्ट्रल को.श्रो. दैंक लि. महेन्द्रगढ़, के श्रमिक श्री सत्यवीर सिंह तथा उसके मबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, प्रब, मौबोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इ सके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1958 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा पामला स्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अधवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री सत्यवीर सिंह की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 18 मार्च, 1985

सं. भ्रो. वि./फरीदाबाद/82-84/10920.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. कैलबीनेटर भ्राफ इण्डिया लि॰, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राध्ने श्याम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद हैं;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम/88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरजरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रमवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राधे श्याम की सेवाग्रों का समापन न्यायोंचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?